- **बुआई की दूरी :** पंक्ति-से-पंक्ति की दूरी 30 सें.मी. तथा पौधे-से-पौधे की दूरी 10 सें.मी.।
- **उर्वरक प्रबंधन :** कुल्थी में उर्वरक की कोई खास आवश्यकता नहीं होती है। फिर भी उत्तम पैदावार के लिए 20 कि.ग्रा. नेत्रजन एवं 60 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। उर्वरक को आवश्यकतानुसार एक बार अथवा दो बार सिंचाई के उपरांत देना चाहिये।
- **सिंचाई :** कुल्थी में सिंचाई की कोई खास आवश्यकता नहीं होती है। हांलाकि फली बनते समय एक सिंचाई करने से कुल्थी के दाने अधिक पुष्ट होते हैं।
- **निकाई-गुड़ाई एवं खरपतवार प्रबंधन :** एक निकाई गुड़ाई बुआई के 26-30 दिनों बाद करें। निकाई-गुड़ाई से अनावश्यक खरपतवार खेत से बाहर निकल जाते हैं, और साथ ही मिट्टी मुलायम हो जाती है। इसका सीधा असर उत्पादन पर पड़ता है।
- **कटनी, दौनी एवं भंडारण :** कुल्थी की फलियाँ एक बार पक कर तैयार हो जाती है। पकने पर फलियों का रंग भूरा हो जाता है और पौधे पीले पड़ने लगते हैं। पके हुए पौधों को काट कर धूप में सुखाकर दौनी करके दाना अलग कर लें। कुल्थी के दानों को धूप में अच्छी तरह सुखाकर ही भंडारित करें।

Printed at Vidya Printers, Patna # 9234849923 E-mail : vidyaprinters@gmail.com

श्री नरेन्द्र सिंह
मा० कृषि मंत्री, बिहार

बिहार सरकार

कृषि विभाग

श्री जीतन राम मांझी
मा० मुख्यमंत्री, बिहार

किसान जागरूकता महाअभियान-सह-रबी महोत्सव 2014

कुल्थी की उन्नत खेती

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)
पोस्टः बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना – 800 014
Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com

कुल्थी की उन्नत खेती

परिचय :

कुल्थी का दलहनी फसल के रूप में बहुतायत किसान खेती करते हैं। कुल्थी की खेती का रकबा बिहार में बहुत कम है। हांलाकि इसमें सम्भावनायें काफी अधिक है, क्योंकि कुल्थी में औषधीय गुण भी विद्यमान है। कुल्थी की खेती कुछ किसान पशुओं के लिये चारा के रूप में भी करते हैं। इसकी खेती करने से भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ जाती है।

- **खेत की तैयारी :** दो-तीन बार खेत की अच्छी तरह जुताई करके पाटा चला दें। अंतिम जुताई के समय गोबर की सड़ी खाद 5 टन प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में अच्छी तरह मिला दें।
- **बुआई का समय :** जुलाई से अगस्त तक बुआई का उचित समय होता है।
- **बीज दर :** 40-50 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर।
- **उन्नत प्रभेद :** डी.बी. 7, कोयम्बटूर, बी.आर. 5, बी.आर. 10, एस. 67/31 (औसत उपज 25-30 क्वि./हे.)।
- **परिपक्वता अवधि :** 90-95 दिन, (बी.आर. 10-95 से 100 दिन)।
- **बीजोपचार :**

अ) बुआई के 24 घंटे पूर्व 2-2.5 ग्राम फफूँदनाशी दवा (जैसे डाईफाल्टान अथवा थीरम अथवा कैप्टान) से प्रति किलो ग्राम बीज का उपयोग करें।

ब) बुआई के ठीक पहले फफूँदनाशक दवा से उपचारित बीज को उचित राइजोबियम कल्चर एवं पी.एस.बी. से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।

स) राइजोबियम कल्चर से बीज उपचार फफूँदनाशी दवा से उपचारित करने के बाद करना चाहिए।